Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 3 | MARCH 2023

शिक्षा स्नातकों की सांगीतिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

वीना लोहार [1]

[1] **सहायक आचार्य (संगीत), विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान रामगिरी, उदयपुर, राजस्थान।**

ABSTRACT:

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य **शिक्षा स्नातकों का पाठ्यक्रम में प्रवेश के समय एवं पूर्ण होने पर सांगीतिक अभिरुचि का अध्ययन करना था। इस** शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। यह अध्ययन कार्य राजस्थान राज्य में उदयपुर शहर के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से संबद्धता प्राप्त विभिन्न शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत 200 शिक्षा स्नातक विद्यार्थियों पर किया गया है। विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक निदेशन द्वारा किया गया। विद्यार्थियों में सांगीतिक अभिरुचि का पता लगाने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में सांख्यिकी प्रविधि के रूप में टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि **संगीत प्रशिक्षण की जानकारी प्राप्त करने के पश्चात** पुरुष व महिला दोनों **विद्यार्थियों की** सांगीतिक **अभिरुचि में** अंतर **देखा गया है।**

KEYWORDS:

शिक्षा स्नातक, संगीत, सांगीतिक अभिरुचि।

प्रस्तावना

"**मिल्टन** ने 'पैराडाइज लॉस्ट 'में लिखा है जब ईश्वर ने सृष्टि रची तब उससे पहले बिखरे हुए महाभूतों को संगीत के द्वारा एकत्र किया। तत्पश्चात सृष्टि की रचना की।

संगीत मानवता का पाठ पढ़ाता है। असभ्य को सभ्यता का और संकीर्ण हृदय को विश्व बंधुत्व का संदेश देता है। संगीत समीर के शीतल झोंके, हृदय की कलुषता, विकृत वासनाओं की संकीर्णता तथा तामसी एवं आसुरी भावनाओं का समूल उच्छेदन कर आत्मा को निश्चल तथा पवित्र बना देता है।

ज्ञानं कोटि गुणं ध्यानं, ध्यानं कोटि गुणं स्त्रोतं।

स्त्रोतं कोटि गुणं जंप, जंप कोटि गुणं गानं।।

अर्थात ज्ञान, स्त्रोत, ध्यान, जप, तप इन इन सभी से बढ़कर 'गायन' है। क्योंकि गायन से परे कुछ नहीं। जिस मनुष्य में गायन के प्रति रुचि नहीं है जो इसके मधुर स्वरों से मोहित नहीं होता वह पतित, विश्वासघाती एवं आत्माद्रोही है। और उसका हृदय अंधकार में रात्रि से भी भयंकर है। संक्षेप में दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो भी संगीत एक महत्वपूर्ण ललित कला है। क्योंकि हर एक कला का लक्ष्य आत्म साक्षात्कार है। आत्म साक्षात्कार के लिए संगीत भी एक महत्वपूर्ण सहायभूत तत्त्व है। विश्व के अंतिम तत्व को हम संगीत के रूप में देखते हैं। संगीत के द्वारा इंद्रिय सुख को बौद्धिक आनंद मानसिक व आध्यात्मिक आनंद को प्राप्त किया जाता है। संगीत का जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। संगीत चिंताओं से मुक्ति को प्रदान करता है। वह मन को शांति प्रदान करता है। संगीत में उच्च विचारों की स्फूर्ति प्रदान करने की शक्ति है। संगीत में शारीरिक कसरत भी है जिससे मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है। मानसिक दृष्टि से भी स्वच्छता प्राप्त करने का साधन संगीत को हम मानते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो हम यह कह सकते हैं कि भावों की अभिव्यक्ति का सूक्ष्म व प्रभावी साधन संगीत है। स्वभावत: मनुष्य अपने भावों को हमेशा व्यक्त करना चाहता है भावों का दमन संगीत नहीं करता बल्कि अभिव्यक्ति में सहायभूत महत्वपूर्ण तत्व है। सामाजिक व धार्मिक त्योहारों को ज्यादा सुखद तथा मंगलकारी बनाने का कार्य संगीत भी करता है। जीवन में उमंग लाने का, सामाजिक उत्साह वर्णन करने का काम संगीत का ही है, क्योंकि मानव जीवन का हर क्षण संगीतमय है। जीवन को सुंदर बनाना यही लक्ष्य कला का होता है। संगीत भी इसका अपवाद नहीं है।"

संगीत की इसी आवश्यकता व महत्व को समझते हुए विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को समझते हुए शिक्षा स्नातकों के पाठ्यक्रम में इस प्रश्न पत्र को भी सम्मिलित किया गया है। क्या शिक्षा स्नातकों में संगीत विषय संबंधी ज्ञान व रुचि का प्रभाव उनके शैक्षिक व्यक्तित्व निर्माण पर पड़ता है? इसी प्रश्न को आधार बनाते हुए शिक्षा स्नातकों में संगीत के प्रति अभिरुचि के स्तर का पता लगाने हेतु शोधकर्ता को दिशा प्राप्त हुई है।

साहित्यावलोकन

ग्राहम एफ वेल्क, मिशेल वाइससिटी एट ऑल (2020)ने मानव विकास और कल्याण पर संगीत का प्रभाव विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन से पता चलता है कि संगीत गतिविधि में शामिल होने से स्वास्थ्य और कल्याण पर विभिन्न तरीकों से और जीवन भर के विभिन्न संदर्भों में सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। **डेविड सूजी (2018)** ने समग्र विकास और संगीत शिक्षा शिक्षकों और सामुदायिक हितधारकों के लिए अनुसंधान विषय पर एक लेख प्रकाशित किया। इस लेख के माध्यम से जो संगीत और कला के अध्ययन के बीच अकादमिक विषयों के रूप में मजबूत संबंधों को प्रदर्शित करता है। **जॉन हैवर्थ (2013)** ने संगीत के माध्यम से सामाजिक कौशल का विकास विषय पर अध्ययन किया। संभावित परिणामों में आत्मसम्मान, अपनेपन की भावना, सहयोग, सीखने में सक्रिय जुड़ाव, सामाजिक कौशल का विकास, कल्याण, लचीलापन और सभी सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्तरों के छात्रों के बीच समावेशिता में वृद्धि शामिल दिखाई देती है।**थॉमस स्केफर, मारियो समुक्कला व सराहन ऑलकर (2013)** ने संगीत हमारे जीवन को कैसे बदलता है। संगीत अनुभव के दीर्घकालिक प्रभाव का एक गुणात्मक अध्ययन विषय पर शोध किया। शोध के परिणामों से पता चलता है कि संगीत वास्तव में हमारे जीवन को बदल सकता है। इसे और अधिक संपूर्ण आध्यात्मिक और सामंजस्य पूर्ण बनाकर कार्यों को अच्छी गुणवत्ता के साथ पूर्ण किया जा सकता है। **छाबड़ा सोनल व मिश्रा महिमा (2020)** ने किशोर छात्रों की व्यक्तिगत मूल्यों पर संगीत सीखने के प्रभाव विषय पर अध्ययन किया। परिणामों से पता चलता है कि संगीत सीखना किशोरों के व्यक्तिगत मूल्यों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन करने से पता चलता है कि संगीत विषय का मानव कल्याण, सामाजिक कौशल, किशोर छात्रों के व्यक्तिक मूल्य, संगीत का जीवन पर प्रभाव एवं शिक्षक व सामुदायिक हित धारकों आदि जैसे विषय पर शोध कार्य हुआ है। शिक्षा स्नातकों के संगीत विषय संबंधी अभिरुचि से संबंधित किसी प्रकार का शोध कार्य नहीं हुआ है तथा इससे मिलते-जुलते जो शोध कार्य हुए हैं वह अन्य विधि, छात्र स्तर आदि से संबंध रखते हैं। शोधार्थी के मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि क्या संगीत विषय शिक्षक के जीवन में कोई विशेष प्रभाव डालता है? शिक्षक शिक्षा के अंतर्गत संगीत विषय की रुचि रखने वाले विद्यार्थी किस प्रकार अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकते हैं? इन्हीं प्रश्नों को खोजने के लिए शोधकर्ता ने अपने अध्ययन विषय का चयन किया है।

शोध उद्देश्य

1 शिक्षा स्नातकों का बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश के समय एवं पूर्ण होने पर सांगीतिक अभिरुचि का पता लगाना।

2 पुरुष शिक्षा स्नातकों के बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि का पता लगाना।

3 महिला शिक्षा स्नातकों के बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि का पता लगाना।

परिकल्पना

1 शिक्षा स्नातकों के बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि में सार्थक अंतर है।

2 पुरुष शिक्षा स्नातकों के बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि में सार्थक अंतर है।

3 महिला शिक्षा स्नातकों के बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि में सार्थक अंतर है।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। यह अध्ययन कार्य राजस्थान राज्य में

उदयपुर शहर के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से संबद्धता प्राप्त विभिन्न शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत 200 शिक्षा स्नातक विद्यार्थियों पर किया गया है। विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक निदेशन द्वारा किया गया। विद्यार्थियों में सांगीतिक अभिरुचि का पता लगाने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में सांख्यिकी प्रविधि के रूप में टी परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्रदतो का विश्लेषण व व्याख्या

1 शिक्षा स्नातकों का बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि का तुलनात्मक विश्लेषण।

इस भाग के अंतर्गत बी.एड. पाठ्यक्रम मैं प्रवेश करते समय तथा 1 वर्ष पूर्ण करने के पश्चात पुरुष व महिला दोनों शिक्षा स्नातकों द्वारा सांगीतिक अभिरुचि परीक्षण को हल करवाया गया और उसमें प्राप्त अंकों के आधार पर दोनों समूहों के विद्यार्थियों के पदों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी -मूल्य निकाला गया जिन्हें सारणी क्रमांक 1 में दर्शाया गया है। इन्हीं सभी आंकड़ों के आधार पर दोनों समूहों के संगीत एक अभिरुचि के मध्य अंतर का विश्लेषण किया गया है।

सारणी क्रमांक: 1

शिक्षा स्नातकों का बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि संबंधी पदों का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' –मूल्य

विद्यार्थी समूह						मध्यमान अंतर	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
पूर्व विद्यार्थी परीक्षण समूह			पश्च विद्यार्थी परीक्षण समूह					
संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन			
200	55.4	35.17	200	62.16	11.71	6.76	2.58	* स्वीकृत

(* 0.05 स्तर पर स्वीकृत ** 0.05 एवं 0.01 दोनों स्तरों पर स्वीकृत)

आरेख क्रमांक: 1

शिक्षा स्नातकों का बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि संबंधी पदों का मध्यमान

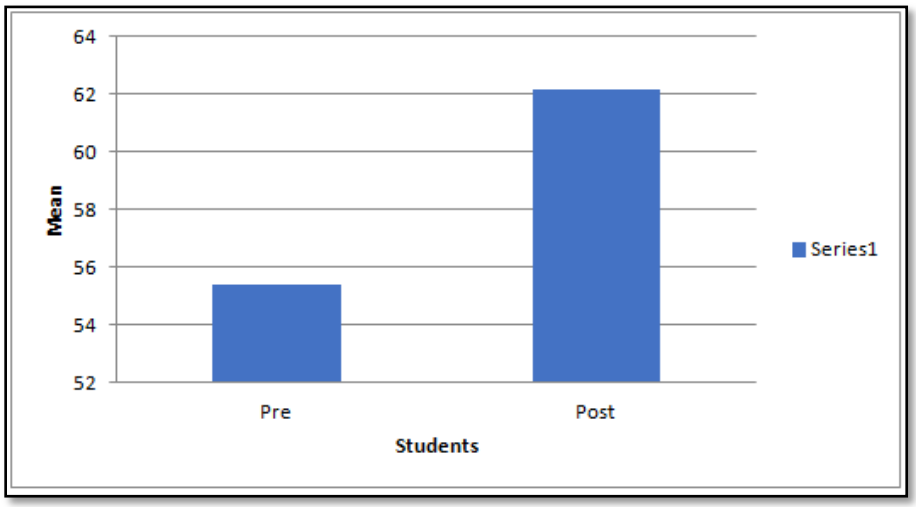

विश्लेषण व व्याख्या

सारणी व आरेख क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है कि शिक्षा स्नातकों के बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश करते समय तथा पाठ्यक्रम का प्रथम वर्ष पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 55.40 व 62.16 है। इनका मानक विचलन भी क्रमशः 35.17 एवं 11.71 है। दोनों समूह के विद्यार्थियों के प्रदेशों के मध्य टी - मूल्य 2.58 है जोकि 398 df पर 0.05 एवं 0.01 स्तर के दोनों विश्वसनीय स्तर के परीकलित मान क्रमशः 1.97 से अधिक एवं 2.59 से कम है। अतः परिकल्पना को 0.05 स्तर पर स्वीकृत करते हुए कह सकते हैं कि पूर्व व पश्च समूह के संगीत एक अभिरुचि में अंतर पाया गया है तथा 0.01 स्तर पर अस्वीकृत करते हुए हम कह सकते हैं कि शिक्षा स्नातकों की संगीत अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

2 पुरुष शिक्षा स्नातकों का बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि का तुलनात्मक विश्लेषण।

इस भाग के अंतर्गत बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश करते समय तथा 1 वर्ष पूर्ण करने के पश्चात पुरुष शिक्षा स्नातकों द्वारा सांगीतिक अभिरुचि परीक्षण को हल करवाया गया। उस में प्राप्त अंकों के आधार पर दोनों समूहों के विद्यार्थियों के पदों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य निकाला गया। जिन्हें सारणी क्रमांक 2 में दर्शाया गया है। इन्हीं सभी आंकड़ों के आधार पर दोनों समूहों के संगीत एक अभिरुचि के मध्य अंतर का विश्लेषण किया गया है।

सारणी क्रमांक: 2

पुरुष शिक्षा स्नातकों का बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि संबंधी पदों का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' –मूल्य

विद्यार्थी समूह						मध्यमान अंतर	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
पूर्व विद्यार्थी परीक्षण समूह			पश्च विद्यार्थी परीक्षण समूह					
संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन			
100	53.08	7.48	100	62.62	11.31	9.54	7.04	** स्वीकृत

(* 0.05 स्तर पर स्वीकृत ** 0.05 एवं 0.01 दोनों स्तरों पर स्वीकृत)

आरेख क्रमांक: 2

पुरुष शिक्षा स्नातकों का बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि संबंधी पदों का मध्यमान

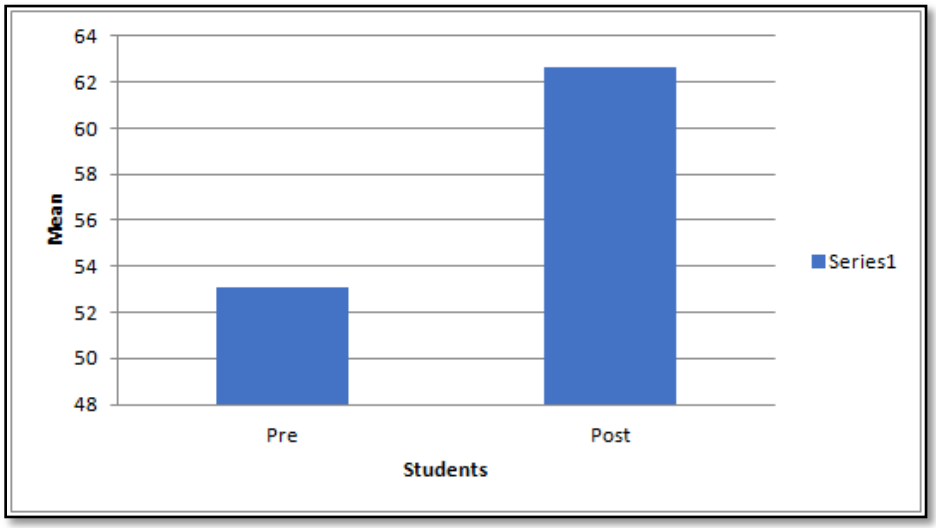

विश्लेषण व व्याख्या

सारणी व आरेख क्रमांक 2 से स्पष्ट होता है कि पुरुष शिक्षा स्नातकों के बी.एड. पाठ्यक्रम मैं प्रवेश करते समय तथा पाठ्यक्रम का प्रथम वर्ष पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः53.08 व 62.62 है। इनका मानक विचलन भी क्रमशः 7.48 एवं 11.31 है। दोनों समूह के विद्यार्थियों के प्रदेशों के मध्य टी मूल्य 7.04 है जोकि 198 df पर 0.05 एवं 0.01 स्तर के दोनों विश्वसनीय स्तर के परीकलित मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 से अधिक है। अतः परिकल्पना को 0.05 एवं 0.01 स्तर पर स्वीकृत करते हुए कह सकते हैं कि पुरुष शिक्षा स्नातकों के पूर्व व पश्च समूह के संगीत एक अभिरुचि में अंतर पाया गया है।

3 महिला शिक्षा स्नातकों का बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि का तुलनात्मक विश्लेषण।

इस भाग के अंतर्गत बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश करते समय तथा 1 वर्ष पूर्ण करने के पश्चात महिला शिक्षा स्नातकों द्वारा सांगीतिक अभिरुचि परीक्षण को हल करवाया गया और उसमें प्राप्त अंकों के आधार पर दोनों समूहों के विद्यार्थियों के पदों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य निकाला गया। जिन्हें सारणी क्रमांक 3 में दर्शाया गया है। इन्हीं सभी आंकड़ों के आधार पर दोनों समूहों के सांगीतिक अभिरुचि के मध्य अंतर का विश्लेषण किया गया है।

सारणी क्रमांक: 3

महिला शिक्षा स्नातकों का बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि संबंधी पदों का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' –मूल्य

विद्यार्थी समूह						मध्यमान अंतर	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
पूर्व विद्यार्थी परीक्षण समूह			पश्च विद्यार्थी परीक्षण समूह					
संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन			
100	52.91	9.28	100	61.69	12.14	8.78	5.75	** स्वीकृत

(* 0.05 स्तर पर स्वीकृत ** 0.05 एवं 0.01 दोनों स्तरों पर स्वीकृत)

आरेख क्रमांक: 3

महिला शिक्षा स्नातकों का बी.एड. पाठ्यक्रम करने से पूर्व व पश्चात सांगीतिक अभिरुचि संबंधी पदों का मध्यमान

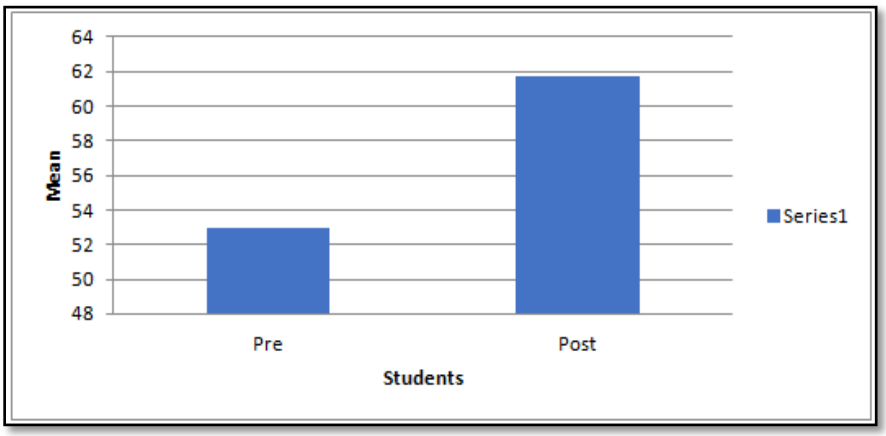

विश्लेषण व व्याख्या

सारणी व आरेख क्रमांक 3 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षा स्नातकों के बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश करते समय तथा पाठ्यक्रम का प्रथम वर्ष पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 52.91 व 61.69 है। इनका मानक विचलन भी क्रमशः 9.28 एवं 12.14 है। दोनों समूह के विद्यार्थियों के प्रदेशों के मध्य टी मूल्य 5.75 है जोकि 198 df पर 0.05 एवं 0.01 स्तर के दोनों विश्वसनीय स्तर के

परीकलित मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 से अधिक है। अतः परिकल्पना को 0.05 एवं 0.01 स्तर पर स्वीकृत करते हुए कह सकते हैं कि महिला शिक्षा स्नातकों के पूर्व व पश्च समूह के संगीत एक अभिरुचि में अंतर पाया गया है।

निष्कर्ष

- शिक्षा स्नातकों के बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश के समय एवं पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात उनकी सांगीतिक अभिरुचि के मध्य में 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। विद्यार्थियों के सांगीतिक अभिरुचि संबंधी पश्च परीक्षण के मध्यमान में अधिकता देखी गई। अतः परिकल्पना को स्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि संगीत प्रशिक्षण की जानकारी प्राप्त करने के पश्चात विद्यार्थियों की अभिरुचि में बदलाव देखा गया है।
- पुरुष शिक्षा स्नातकों के बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश के समय एवं पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात उनकी सांगीतिक अभिरुचि के मध्य में 0.05 व 0.01 दोनों स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। विद्यार्थियों के सांगीतिक अभिरुचि संबंधी पश्च परीक्षण के मध्यमान में अधिकता देखी गई। अतः परिकल्पना को स्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि

  संगीत प्रशिक्षण की जानकारी प्राप्त करने के पश्चात पुरुष शिक्षा स्नातकों की सांगीतिक अभिरुचि में बदलाव देखा गया है।
- महिला शिक्षा स्नातकों के बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश के समय एवं पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात उनकी सांगीतिक अभिरुचि के मध्य में 0.05 व 0.01 दोनों स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। विद्यार्थियों के सांगीतिक अभिरुचि संबंधी पश्च परीक्षण के मध्यमान में अधिकता देखी गई। अतः परिकल्पना को स्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि संगीत प्रशिक्षण की जानकारी प्राप्त करने के पश्चात महिला शिक्षा स्नातकों की सांगीतिक अभिरुचि में बदलाव देखा गया है।

शैक्षिक निहितार्थ

सांगीतिक अभिरुचि रखने वाले विद्यार्थी विद्यालय या महाविद्यालय स्तर पर अपनी सह शैक्षिक गतिविधियों के अंतर्गत नेतृत्व क्षमता के साथ सांस्कृतिक व साहित्यिक गतिविधियों को पूर्ण कराने में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं। संगीत विषय में रुचि रखने वाले शिक्षक व विद्यार्थियों का विभिन्न विषयों में तनाव की स्थिति को कम करने व विषम परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने का अनुशीलन भी बढ़ाने में मददगार हो सकता है।

REFERENCES

1. भटनागर, ए.बी. एवं भटनागर मीनाक्षी(1996): " मापन एवं मूल्यांकन", मेरठ,आर. लाल बुक डिपो।

2. बिहारी, रमनलाल एवं पलोड सुनीत (2007): "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा", मेरठ,आर. लाल. बुक डिपो।

3. गोस्वामी, नव प्रभाकर एवं माथुर प्रीति(2017):" शिक्षा में नाटक और कला", जयपुर, आस्था प्रकाशन।

4. गुप्ता, रुचि(2006): " भारतीय संस्कृति शाश्वत जीवन दृष्टि एवं संगीत", नई दिल्ली, कनिष्क पब्लिशर्स।

5. गुप्ता, एस.पी.(2008): " आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन", इलाहाबाद,शारदा पुस्तक भवन।

6. जायसवाल, सीताराम(1978): " शिक्षा मनोविज्ञान", लखनऊ,प्रकाशन केंद्र पोस्ट ऑफिस महानगर सीतापुर रोड।

7. कुलकर्णी, वसुधा(1990): " भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान", जोधपुर ,राजस्थानी ग्रंथागार।

8. लावण्य, कीर्ति सिंह(2005): "संगीत संजीवनी", नई दिल्ली ,कनिष्क पब्लिशर्स।

9. शर्मा, आर. ए. (2012): "शिक्षा अनुसंधान", मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।

10. Chabra, Sonal and Mishra Mahima (2012): "A study of the effect of learning music on the personal values of adolescent students", Rawal college of Education, Faridabad, Haryana.

11. John, Heyworth (2013): "Developing social skills through Music: The impact of General classroom Music in an Australian lower socho economic area primary school. Childhood education,Vol-89,Issue-4,pages 234-242.

12. Thomas, Schafer and Mario Smukalla (2013): "How music change our lives: A qualitative study of the long term effects of intense musical experience", journal sagepub.com.

WEBLIOGRAPHY :

1.https://www.researchgate.net/profile/Anuprita-Thakur/publication/263476326

2.https://www.researchgate.net/publication/335766697

3.https://dl.acm.org/doi/10.1145/3298689.3347021

4. https://www.academia.edu/3024885/